शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निर्मल वर्मा की कहानियों में चित्रित आर्थिक चिंतन

डॉ.संजय कुमार शर्मा
हिन्दी विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर अनुसंधान केंद्र
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय
तलोदा, नंदुरबार, महाराष्ट्र, भारत

शोध संक्षेप

आधुनिक समाज में अर्थ सबसे महत्वपूर्ण वस्तु मानी जाती है। अर्थ के कारण जीवन अर्थवान बनता है और अर्थ के अभाव में अर्थहीन हो जात है। जिसकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती है उसे समाज में प्रतिष्ठित समझा जाता है। भारतीय दर्षन के अनुसार अर्थ को चार पुरुषार्थों में से एक माना गया है। किसी भी समाज का संपूर्ण विकास उसके आर्थिक ढांचे पर ही निर्भर करता है। अर्थ की व्यवस्था का प्रभाव सामान्यजनों पर ही पड़ता है। परिवार, समाज, राजनीति, धर्म साहित्य, कला का विकास अर्थ पर ही आधारित है। अर्थ ही वह शक्ति है जिसके हाथ में समाज की बागडोर है। अगर अर्थव्यवस्था में परिवर्तन आते हैं तो सारे सामाजिक स्तर पर परिवर्तन दिखाई देते हैं। अर्थकेंद्रित समाज में जनजीवन के उतार-चढ़ाव का कारण अर्थ ही है। भारतीय समाज व्यवस्था में पैतृक संपत्ति विरासत के रूप में अनायस ही पुत्र को प्राप्त होती है। पिता के पष्चात् उसकी जमीन, जायदाद, मकान और उत्पादन के साधन-सामग्री आदि का उत्तराधिकारी पुत्र ही होता है। निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में आधुकिन मध्यवर्ग की आय का स्रोत प्रायः नौकरी है। उनके कथा साहित्य में भी अर्थ महत्वपूर्ण है। उनके पात्र अर्थ के कारण ही अलग-अलग प्रकार की जिंदगी जीते हैं।

आर्थिक अभाव और महात्वाकांक्षाएं

आधुनिक समाज में उच्च वर्ग के सामने भौतिक स्तर संबंधी कोई समस्याएं नहीं हैं। अर्थ के आधार पर वह सारी समस्याओं को हल कर लेता है। निम्न वर्ग मे तो भौतिक सुविधा संबंधी लहर ही नहीं उठती। भूख की समस्या उसके लिए महत्वपूर्ण होती है। जिसकी शांति के लिए वह हमेषा चिंताग्रस्त रहता है। इसमें आधुनिक मध्यवर्ग को सबसे ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है। महात्वाकांक्षा होने के कारण यह वर्ग न तो इच्छाओं की पूर्ति में सक्षम हो पाता है और न इच्छाओं का दमन कर सकता है। परिणामतः सबसे अधिक घुटन, तनाव और निराषा मध्यवर्ग में फैली दिखाई देती है। अर्थ के अभाव के कारण वह असंतुष्टि से आक्रांत रहता है और विकास नहीं कर पाता। छोटे-छोटे सुखों की पूर्ति न होने से वह असंतुलित और निष्क्रिय होकर आत्मलीन नहीं हो पाता। आज की दूषित षिक्षा व्यवस्था के कारण बेकारी से उत्पन्न समस्याओं का सामना भी इसी वर्ग को करना पड़ता है।

निर्मल वर्मा की कहानियों में अर्थ चिंतन

'लंदन की एक रात' कहानी के युवक आर्थिक अभाव के कारण होटल में काम पूछने बार-बार जाते हैं, लेकिन होटल का मालिक कहता है, ''आज इतना ही उन्होंने सहानुभूतिपूर्ण भाव से हमारी ओर देखा, आप लोग कल आइए, शायद कुछ आदमियों की जरूरत पड़ेगी।''1 आर्थिक अभाव बेकारी निर्माण करता है और निराषा भी पैदा

करता है। इससे आदमी आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाता है।

'दूसरी दुनिया' कहानी की मिसेस पार्कर अपनी बच्ची के साथ अकेली रहती है। पति दूसरे शहर में नौकरी ढूंढने चला जाता है। अगर इनमें अर्थ का अभाव न होता तो पत्नी की नौकरी पर पति बच्ची को संभालते हुए आराम से जीवन यापन करता।

'दो घर' का नायक हर छुट्टी में कलकत्ते में अपनी बीवी बेटे के पास जाना चाहता है, उसकी विदेषी पत्नी उसे बिलकुल नहीं रोकती। लेकिन अर्थाभाव के कारण अंत तक नहीं जा सकता। 'दो घर' अपनी समग्रता में उन मध्यवर्ग आदमियों की कहानी है जो किसी किनारे नहीं है, न इधर न उधर, बीच मंझधार में जी रहे हैं और कभी किनारे नहीं पहुंचा पाने की भयावह पीड़ा को झेलने के लिए अभिषप्त हैं।

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में बहुत से पात्र आर्थिक अभाव के षिकार हैं। लेकिन उनके मन में किसी न किसी प्रकार की अभिलाषा है। वे उसी के लिए कठिन समस्याओं का सामना करते हुए जीते हैं। इस तरह आधुनिक मध्यवर्ग का हर आदमी आर्थिक अभाव का सामना करते हुए जीवन-यापन करता है।

बेरोजगारी

आधुनिक युग में शिक्षा का प्रचार-प्रसार बहुत अधिक होते हुए भी उसकी परिणति बेरोजगारी में हो रही है। षिक्षा मषीन ने दिनोंदिन बेरोजगारी का निर्माण किया है। बेरोजगार उसे कहा जाता है, जो काम करना चाहता है पर काम उपलब्ध नहीं होता। आज बेरोजगारी का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। बेरोजगारी जो न केवल आर्थिक ढांचे के लिए, बल्कि समाज व्यवस्था और तंत्र के लिए भी एक भयंकर खतरा बन गयी है। बेरोजगारी का संसर्ग व्यक्ति, परिवार, शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, सांस्कृतिक जीवन आदि सभी से होता है। परिणामतः युवकों के मन में गहरी निराशा एवं आक्रोश की भावना उत्पन्न हो जाती है।

निर्मल वर्मा ने मानव की आंतरिक समस्याओं को अधिक महत्व दिया है लेकिन उन्होंने समाज की स्थूल समस्याओं को नजरअंदाज नहीं किया है। निर्मल ने बेकारी और बेरोजगारी जैसी सामाजिक समस्याओं पर कलम चलायी है।

'सितंबर की एक शाम' एक बेरोजगार युवक की कथा है। कहानी का नायक सत्ताइस वर्ष का बेकार युवक है। नायक अपना घर छोड़ आता है और बेरोजगारी में इधर-उधर घूमता है। बहन उसे गांव वापस जाने के लिए पैसे देती है और वह उन पैसों से एक युवती के साथ रात गुजारने चला जाता है। उसे पहली बार अपने जीवन की सार्थकता लगती है। नायक बेकार है। वह दुनिया को छू रहा है, जो अर्सा हुआ पीछे छूट गयी है। इसलिए वह कहां पीछे लौटे। निर्मल वर्मा ने इस कहानी में युवक की बेरोजगारी को स्वतंत्रता से जोड़ते हुए नया अर्थ प्रदान किया है। 'सितंबर की एक शाम' कहानी के संदर्भ में नामवर सिंह लिखते हैं, ''उसने आंखें उठायी, दुनिया उसके सामने पड़ी थी और उसकी उम्र सत्ताइस वर्ष की थी एक-एक वाक्य बहुत कुछ कह देता है, एक वाक्य में सारा अंतर्विरोध झलक उठता है। संभावना और व्यर्थता का अंतर्विरोध। बेकारी पर लिखी हुई दर्जनों कहानियां एक ओर और सितंबर की एक शाम एक ओर।''2

'पिक्चर पोस्टकार्ड' कहानी के युवा पात्र भी बेरोजगारी झेल रहे हैं। कहानी के साड़ी, परेष ने कुछ साल पहले एम.ए. किया था। अब बेकार है। कहानी का आरंभ ही समाचार पत्र में रिक्त स्थान वाले पृष्ठ पर पेंसिल से निषान बना रहे सीडी से होता है। पते नोट करते-करते उसकी

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नोट बुक भर जाती है, लेकिन नौकरी नहीं मिलती। 'इस बार कहां एप्लाई करोगे ? मैंने पूछा। उसने अपनी नोटबुक पर अखबार से एक पता उतार लिया।

'तुम्हारी नोटबुक अभी पूरी नहीं भरी है ? मैंने कहा।

'शटअप उसने कहा।''3

सीडी इस बार एप्लाई करेगा। वह काम्पीटिषन की तैयारी कर रहा है। यदि इस बार रह गया तो ओवर एज हो जाएगा। कहानी के निकी को अगर बीती उम्र के कोई पिछले पांच साल लौटा दे तो वह 'आर्मी में चला जाएगा'।4 उससे निठल्ले बैठा नहीं जाता। उसे किसी प्रोफेषनल थियेटर में नौकरी भी नहीं मिलती। वह सोचता है कि यहां रहकर कभी कुछ नहीं होगा। कहानी के पात्र पत्र-पत्रिकाओं में राषिफल पढ़ते हैं और प्रत्येक अच्छी सूचना को नौकरी के आॅफर से जोड़ लेते हैं।

'माया का मर्म' कहानी के पात्र बेकारी के कारण स्वयं को बेकार समझने लगता है। यहां तक कि उसे अपनी सोच भी अपनी तरह बेकार लगने लगती है और वह सोचना ही बंद कर देता है। 'मेरा सोचना मेरे जैसा ही बेकार है, इसलिए आज नहीं सोचूंगा।''5 वह युवक बच्ची के सामने पहली बार बिना हया-षर्मा के बेकारी का इकरार करता है। ''हमें कोई काम नहीं करना पड़ता इसलिए हररोज एक नयी छुट्टी मिल जाती है। मैंने पहली बार बेरोजगारी के इस लम्बे उदास अर्से पर से दरिद्रता की राख को बिना दर्द के कुरेद दिया। जो अभाव की रिक्तता अब तक चुभती थी। वह अब भी है किंतु जैसे वह अपनी न रहकर परायी बन गयी है।''6

'लंदन की एक रात' कहानी का आरंभ भी सोडे की एक फैक्टरी के बाहर खड़े बीस पच्चीस बेरोजगारों की भीड़ अधिक होने के कारण उन्हें काम नहीं मिलता। इनमें से बहुत से बेकार तो तीन चार शिलींग का टिकट लेकर लंदन के सुदूर कोने से आए हैं। सभी के हाथ के थैले में रात के ड्यूटी के कपड़े और खाने का सामान है। किसी के लिए भी यह विष्वास करना कठिन है कि अगली ट्यूब से उसे वापस जाना होगा। यहां भी निराश पात्र कांटीनेंट जाने की सोचते हैं। विली ने कहा, ''मेरा एक दोस्त जर्मन गया है, वहां नौकरियों की कमी नहीं है।''7

'कुत्ते की मौत' कहानी के नन्हें ने भी दस वर्ष पहले बी.ए. किया था तब से वे बेकार हैं। वर्मा जी की कहानियों में बेरोजगारी अलग-अलग कारणों से निर्माण हुई है। किंतु निर्मल के पात्र बेरोजगारी का मुकाबला करते दिखायी देते हैं।

भूख और गरीबी

दरिद्रता का एक पहलू वह भी है, जहां आदमी इस निर्णय से बच जाता है कि असहनीय भूख और सर्दी में से कौन सी वस्तु है, क्योंकि इस निर्णय का कोई फायदा नहीं। उसके पास दोनों हैं और दोनों में से एक चुनने का कष्ट उसे नहीं करना। यह स्थिति निर्मल वर्मा की 'अमालिया' में है। यहां तीन युवक अजनबी शहर के अंधेरे में बेसमेंट की बासी हवा, मरे चूहों सरीखी सीलन भरे बिस्तरों की दुर्गंध में रह रहे हैं। इतनी दरिद्रता है कि वे अपनी आधी जली मोमबत्ती को अंधेरे जीने में बड़ी किफायत से जलाया करते हैं।

'लंदन की एक रात' कहानी का नायक उपर से काफी सस्ते दीखने वाले एक चिप्स रेस्तरां में आलू के तथा टोस्ट का आर्डर करने के पष्चात् मीनू देखता है कि मीनू में इन चीजों के दाम उसकी जेब में पड़े पैसों से कहीं अधिक हैं। वह बहाना बनाकर वहां से भागता है। अपनी संत्रस्त मनःस्थिति के कारण एक गली से दूसरी गली में भागता ही जाता है। 'छुट्टियों के बाद' कहानी में गाड़ी में बैठा युवक देखता है कि उसके अंदर एक

बेहूदा-सा ख्याल आता है कि इतनी रकम में तो वह पेरिस में दो दिन और रुक सकता था।

वेश्याओं की दरिद्रता 'पराए शहर में' तथा 'इतनी बड़ी आकांक्षा' कहानी में दिखायी देती है। 'पराए शहर में' कहानी की वैष्या एक विषालकाय स्त्री है। ''उसने सस्ती जार्जट की लम्बी स्कर्ट पहन रखी है। जुराबें नायलन की थीं, लेकिन एड़ियों के पास वे घिस गई हैं। जान पड़ता था अर्से उसे उन्हें धोया नहीं गया है।''8 गहने के लालच की जिप्सी लड़की क्लब में फौजी के साथ ऐसे डांस करती है, मानो ड्यूटी निभा रही हो। वह तीन रातों से बराबर सोई नहीं।

युग यथार्थ के विषय में निर्मल वर्मा लिखते हैं, ''सड़क और सिनेमाघर की दुनियाओं के बीच जो अंतराल हमारे देष में है, वह अन्यत्र कहीं नहीं हैं। स्कूल से लौटते हुए भूखे-प्यासे बच्चे घेटो की प्रतीक्षा में खड़े रहते हैं। चिलचिलाती धूप में अनेक सूखे बदहवास चेहरे एक तरफ, सिनेमा की फिल्मों में कार्नफ्लेक्स खाते, चिकने चमचमाते चेहरे दूसरी तरफ। इन दोनों के बीच तालमेल बिठाना मुझे असंभव लगता है।''9 यही यथार्थ बोध संबंधों को गहरी संवेदना-कटुता, रंगभेद की कसक, युद्ध का आतंक, अत्याचार, बेकारी की विभीषिका, भूख की नग्नता लिए है। इस तरह निर्मल वर्मा के पात्र भूख और गरीबी से त्रस्त हैं।

शरीर विक्रय

आधुनिक मध्यवर्ग में जहां नारियों को पुरुषों को समान अधिकार तथा जीविकोपार्जन के समग्र साधन उपलब्ध हैं, वहां आज भी वेश्या समस्या का उन्मूलन नहीं हो सका है। वेश्यावृत्ति का प्रमुख कारण आर्थिक विषमता, सांस्कृतिक गतिरोध, भौतिकवादी संस्कृति और नैतिक मूल्यों का पतन है। आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों ने नारी को वेश्यावृत्ति करने के लिए विवश किया है। आज इस वर्ग की नारी सामाजिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक आदि मूल्यों को तिलांजलि देकर केवल अर्थप्राप्ति में ही संलग्न है। इन संवेदनाओं को 'पराए शहर में' अभिव्यक्ति मिली है। 'पराए शहर में' कहानी में लड़का उस औरत के साथ रात गुजारने के लिए पांच सौ रुपये मांगता है। ''इसके साथ सोओगे ? उस लड़के ने फुसफुसाकर कहा - सिर्फ पांच सौ लीरा....तुम पूरी रात उसके साथ रह सकते हो।''10 नायक कुछ भी नहीं बोलता, तब वह औरत उसका हाथ अपने हाथ में लेकर स्कर्ट पर रगड़ने लगी। उसकी आंखें नींद और नशे से भरी थीं। ''वह लड़का मेरे और निकट आया तीन सौ लीरा....सिर्फ एक घंटे के लिए।''11 यहां स्पष्ट रूप से दिखायी देता है कि वह औरत आर्थिक कारणों से ही अपना शरीर विक्रय कर रही है। फ्रांस, बेल्जियम तथा न्यूयार्क में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार यह ज्ञात हुआ है कि वेष्यावृत्ति का सबसे बड़ा कारण भूख है। वहां के सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्य व्यक्ति को अनैतिकता की ओर झुकने में कोई आपत्ति नहीं उठाते।

'अमालिया' कहानी में अमालिया भूख के कारण शरीर बेचने अरब युवक के साथ उस सीलन भरे बेसमेंट में कमरे में जाती है। क्योंकि उससे भी कुछ रुपये मिले यह उसकी कामना होगी। अमालियां अपनी साथिन के बारे में कहती है, ''मेरी एक साथिन और है। वह रात को बेकरी में काम करती है, मैं काम पर जाती हूं, वह सो रही होती है, और जब वह बाहर निकलती है तो मैं सो रही होती हूं।''12 इस तरह अमालिया कालगर्ल बनकर धन कमाती है। उसके ग्राहक टूरिस्ट, छात्र बड़े लोग होते हैं। ब्राजिलियन उससे पूछता है, क्या यहां तुम्हारे बहुत दोस्त हैं। तब वह कहती है कि है और नहीं भी। ज्यादातर विदेषी टूरिस्ट

होते हैं, एक दिन साथ रहते हैं दूसरे दिन उनका पता भी नहीं चलता। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अमालिया टूरिस्टों के साथ अपनी रातें बिताती रहती है और कमाती है। इस तरह अमालिया अर्थ के लिए अपना शरीर विक्रय करती है।

संदर्भ ग्रंथ

1 निर्मल वर्मा, लंदन की एक रात, पृष्ठ 107
2 नामवर सिंह, कहानी नयी कहान, पृष्ठ 53
3 निर्मल वर्मा, पिक्चर पोस्टकार्ड, पृष्ठ 103
4 निर्मल वर्मा, पिक्चर पोस्टकार्ड, 120
5 निर्मल वर्मा, माया का मर्म, पृष्ठ 34
6 निर्मल वर्मा, माया का मर्म, पृष्ठ 41
7 निर्मल वर्मा, लंदन की एक रात, पृष्ठ 112
8 निर्मल वर्मा, पराए षहर में, पृष्ठ 77
9 निर्मल वर्मा, बीच बहस में, भूमिका, पृष्ठ 15
10 निर्मल वर्मा, पराए षहर में, पृष्ठ 77
11 निर्मल वर्मा, पराए षहर में, पृष्ठ 78
12 निर्मल वर्मा, अमालिया, पृष्ठ 113
13 नामवर सिंह, कहानी नयी कहानी, पृष्ठ 53